ISSN: 2456-4583

Global Multidisciplinary Research Journal
A Peer Reviewed/Refereed Bi-Annual Research Journal of Multidisciplinary Researches
Volume 1 Issue 1 September 2016, pp. 43-47

Global Development Society
6, New Tilak Nagar, Firozabad-283203 (UP)

मानसिक स्वास्थ्य का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. गीता यादव

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, ए.के. कॉलेज, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद

प्राप्ति- 25 अगस्त 2016, **संशोधन**- 28 अगस्त 2016, **स्वीकृति**- 30 अगस्त 2016

प्रस्तावना

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु जनपद फिरोजाबाद के हाथवन्त कस्बे के 10 माध्यमिक विद्यालयों में से 2 विद्यालयों का चयन किया गया है तथा मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी 6 बिन्दुओं का लिंग भेद के आधार पर अध्ययन किया गया है। 1. संवेगात्मक स्थिरता, 2. समायोजन, 3. स्वायत्तता, 4. सुरक्षा-असुरक्षा, 5. आत्म-प्रत्यय तथा 6. बुद्धि। परिणामों के विश्लेषणोपरान्त पाया गया कि मानसिक स्वास्थ्य छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को धनात्मक रूप से प्रभावित करता है तथा लिंग के भेद के आधार पर मानसिक स्वास्थ्य के 6 प्रत्ययों में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

शिक्षा मानव विकास का मूल आधार है। शिक्षा ही एकमात्र सीढ़ी है जिसे पार करने से कोई व्यक्ति अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँच सकता है। शिक्षा के माध्यम से ही बालक की शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों एवं क्षमताओं का विकास होता है। एडम्स महोदय ने शिक्षा को एक द्विध्रुवीय प्रक्रिया बताया, वहीं डी.वी. महोदय ने शिक्षा को त्रिमुखी प्रक्रिया, जिसमें तीन ध्रुवों के रूप में शिक्षक एवं पाठ्यक्रम को रखा गया है। जिसमें छात्र का स्थान सर्वोपरि होता है। क्योंकि बिना छात्र हम शिक्षक एवं पाठ्यक्रम की कल्पना नहीं कर सकते हैं। आज के छात्र कल के भावी नागरिक हैं इसलिए हमें छात्रों को अच्छी शिक्षा एवं अच्छा वातावरण देना आवश्यक है। शिक्षा की प्रक्रिया पर बाह्यय एवं आन्तरिक दशाओं का प्रभाव पड़ता है। जब भी शिक्षक, छात्र एवं पाठ्यक्रम तीनों में कोई एक भी प्रभावित होता है तो अन्य भी अपने आप प्रभावित हो जाते हैं।

भारत एक दिन-प्रतिदिन विकास की ओर अग्रसर होने वाला देश है जहाँ आर्थिक व सामाजिक विकास की नवनीतियों के साथ शिक्षा का विकास व प्रसार भी एक विशेष चिंतन का विषय है। ऐसी अवस्था में देश की विभिन्न शिक्षा समस्याओं को उचित रूप से सुलझाने हेतु वर्तमान शिक्षा एवं छात्रों की समस्याओं का परिस्थितियों एवं घटनाओं के विषय में अध्ययन करना आवश्यक है। छात्रों पर विभिन्न प्रकार की दशाएं अपना प्रतिकूल प्रभाव

डालती है। जैसे अध्यापकों का अनुचित व्यवहार, सामाजिक, आर्थिक स्थितियाँ, पारिवारिक वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य इत्यादि। व्यक्ति या बालक द्वारा सामान्य व समायोजनपूर्व व्यवहार प्रदर्शित न करना, मानसिक अस्वस्थता को इंगित करता है।

आधुनिक शिक्षा में वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों के उदय से शिक्षण अवस्था में जटिलता प्रवेश कर गई है और इस जटिलता के दौर में छात्र तभी सफल हो सकता है जब वह मानसिक रूप से पूर्णतः स्वस्थ हो और अपने कार्य क्षेत्र से सन्तुष्ट हो। छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को बिगाड़ने में कार्य का अत्यधिक भार, विद्यालयों में उचित शैक्षिक उपकरणों का अभाव, सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ, समाज में संशयपूर्ण व विपरीत स्थितियों, पारिवारिक वातावरण, अस्वस्थ निवास स्थान, अश्लील साहित्य, अध्यापकों का अनुचित व्यवहार, विद्यालय की वातावरणीय दशा आदि कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः शिक्षण कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए आवश्यक है कि उन सभी कारकों का यथासम्भव निवारण करने का प्रयत्न किया जाए जो कि छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य में यथासम्भव बाधा पहुँचाते हैं।

शिक्षा अधिकांशतः एक मानसिक क्रिया है जो छात्रों के मस्तिष्क से सम्बन्धित होती है। अध्ययनकर्ती ने कई बार अपने आसपास के विद्यालयों एवं पारिवारों में छात्रों पर शिक्षा के लिए पड़ने वाले दबावों को महसूस किया और जब विद्यालय में अध्यापक के व्यवहार तथा परिवार में माता-पिता के व्यवहार में छात्रों के प्रति अपनी आशाएं झलकती हैं तब वे नहीं समझ पाते हैं कि छात्र मानसिक रूप से स्वस्थ है अथवा नहीं। इस दशा में छात्र का सर्वांगीण विकास एक कोरी कल्पना बन कर रह जाती है।

अतः अध्ययनकर्ती को जिज्ञासा हुई कि माध्यमिक विद्यालयों में जो छात्र अध्ययनरत हैं वे मानसिक रूप से स्वस्थ हैं अथवा नहीं और उनका मानसिक स्वस्थता एवं मानसिक अस्वस्थता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। और क्या लिंग भेद की परिस्थितियाँ भी मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। प्रस्तुत शोध इन्हीं परिस्थितियों के अध्ययन का एक प्रयास है।

अध्ययन के उद्देश्य

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जानकारी प्राप्त करना तथा उनकी उपलब्धियों पर मानसिक स्वास्थ्य के पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

1. छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई अन्तर नहीं होता है।
2. छात्र एवं छात्राओं को शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. छात्र एवं छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

पदों की परिभाषा

उच्च माध्यमिक स्तर- उच्च माध्यमिक स्तर के अन्तर्गत 10 + 2 की शिक्षा प्राप्त करने वाले सभी छात्रों को रखा जाता है।

मानसिक स्वास्थ्य

मनुष्य के दैनिक जीवन की पूर्ण सन्तुलित और सामंजस्यपूर्ण क्रियाशीलता ही उसके मानसिक स्वास्थ्य की परिचायक है। मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ केवल मानसिक रोगों की अनुपस्थिति मात्र ही नहीं है बल्कि यह शरीर और मन दोनों का प्रभावशाली समन्वय है। जो व्यक्ति के देखने, सोचने एवं करने के बीच एकीकरण का परिणाम होता है। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति अपनी इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं, आदर्शों आदि को जीवन की वास्तविकताओं के अनुरूप ढालकर अपने तथा अपने वातावरण के मध्य एक सन्तोषजनक सम्बन्ध स्थापित करता है। इस प्रकार मानसिक स्वास्थ्य एक सन्तुलित मनोदशा की अवस्था होती है।

शैक्षिक उपलब्धि

जब छात्रों को निश्चित समय में निश्चित पाठ्यक्रम के लिए प्रशिक्षित कर लिया जाता है तो छात्रों को सिखाए हुए ज्ञान का मापन किया जाता है और मापन में प्राप्त अंक ही छात्र की शैक्षिक उपलब्धि कहलाते हैं जो छात्रों की सफलता-असफलता को प्रदर्शित करती है।

अध्ययन अभिकल्प

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए शोध की वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को अपनाया जाता है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत फिरोजाबाद जिले के 4 इण्टर कॉलेजों का चयन किया गया है। न्यादर्श का चयन सोदेश्यपूर्ण विधि द्वारा किया गया है। शोध के लिए 50 छात्रों एवं 50 छात्राओं को अध्ययन के लिए चुना गया है तथा शैक्षिक उपलब्धि के रूप में हाईस्कूल की बोर्ड परीक्षा के अंकों को लिया गया है।

उपकरण

मानसिक स्वास्थ्य के अध्यन के लिए डॉ. अरूण कुमार सिंह एवं अल्पना सेन गुप्ता द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

तालिका संख्या-01: छात्रों-छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य की तुलना

क्र. सं.	*आयाम*	*लिंग भेद*	*संख्या*	*मध्यमान*	*मानक विचलन*	t	*अन्तर*
1.	संवेगात्मक स्थिरता	छात्र	50	8.0	2.08	1.023	सार्थक अन्तर नहीं है
		छात्राएं	50	7.56	2.26		
2.	समायोजन	छात्र	50	27.56	2.56	0.521	सार्थक अन्तर नहीं है
		छात्राएं	50	27.2	4.18		

3.	स्वायत्तता	छात्र	50	9.76	2.46	1.09	सार्थक अन्तर नहीं है
		छात्राएं	50	10.24	1.87		
4.	सुरक्षा-असुरक्षा	छात्र	50	9.4	2.0	1.58	सार्थक अन्तर नहीं है
		छात्राएं	50	10.0	1.77		
5.	आत्म प्रत्यय	छात्र	50	9.84	1.78	2.59	सार्थक अन्तर नहीं है
		छात्राएं	50	8.62	2.82		
6.	बुद्धि	छात्र	50	13.48	5.00	1.76	सार्थक अन्तर नहीं है
		छात्राएं	50	11.84	4.28		
समग्र मा. स्वास्थ्य		छात्र	50	13.00	2.64	0.763	सार्थक अन्तर नहीं है
		छात्राएं	50	12.58	2.8	8.6	

तालिका संख्या 02: छात्रों-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि

लिंग भेद	*संख्या*	*मध्यमान* (M)	*मानक विचलन* (SD)	*t*	*अन्तर*
छात्र	50	388.4	52.95	1.029	कोई सार्थक अन्तर नहीं है
छात्राएं	50	400.4	63.24		

तालिका संख्या 03: छात्रों-छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

लिंग भेद	*मानसिक स्वास्थ्य*	*संख्या*	*मध्यमान* (M)	*मानक विचलन* (SD)	*t*	
छात्र	अच्छा मा. स्वास्थ्य	9	406.67	40	4.74	0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।
	निम्न मा. स्वास्थ्य	7	320.00	33.4		
छात्राएं	अच्छा मा. स्वास्थ्य	6	450	20	7.43	01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।
	निम्न मा. स्वास्थ्य	14	350	40		
कुल समूह	अच्छा मा. स्वास्थ्य	15	422.67	39.4	6.035	0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।
	निम्न मा. स्वास्थ्य	21	342.86	38.72		

परिणाम

तालिका संख्या 01 व 02 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि तालिका संख्या 01 दिखाती है कि छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के 6 आयामों एवं समग्र मानसिक स्वास्थ्य में कोई अन्तर नहीं है। विद्यार्थियों में लिंग भेद के आधार पर मानसिक स्वास्थ्य उच्च व निम्न नहीं होता। अतः परिकल्पना न. 1 छात्र/छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई अन्तर नहीं है, स्वीकृत होती है।

तालिका संख्या 02 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि लिंग भेद के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित नहीं होती है। क्योंकि τ का मान 1.029 प्राप्त हुआ है जो दोनों ही स्तरों पर असार्थक है।

तालिका संख्या 03 छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव को प्रदर्शित करती है। तालिका के निरीक्षण से स्पष्ट होता है कि अच्छे मानसिक स्वास्थ्य वाले छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च है। जबकि निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि भी निम्न पाई गई है। अतः कहा जा सकता है कि छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। अतः परिकल्पना 02 स्वीकृत है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं उसके आयामों में लिंग भेद के आधार पर अवश्य ही कोई अन्तर नहीं पाया गया है। लेकिन उच्च मानसिक स्वास्थ्य वाले छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि से उच्च है। अतः यह अवश्य कहा जा सकता है कि छात्र व छात्राओं को समान सुविधाएं मिलने के कारण तथा समाज में छात्राओं को शिक्षित करने के प्रति जागरूकता आने से लिंग भेद के आधार पर मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित नहीं करता लेकिन मानसिक स्वास्थ्य का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव तालिका 03 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। अतः इस तथ्य के आधार पर छात्र व छात्राओं की शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, परीक्षण विधियों में अन्तर करने की आवशकता नहीं है। बल्कि दोनों के ही मानसिक स्वास्थ्य व शैक्षिक उपलब्धि को बढाने के लिए समान प्रयास किए जाते हैं। इसके लिए अध्यापकों को छात्र–छात्राओं की तर्कशक्ति, निर्णय शक्ति को विकसित करने के लिए प्रयास किया जाना चाहिए। शिक्षक को कक्षा में छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के कारण अन्धकार की गर्त में न चला जाए। छात्रों को नित नवीन एवं सृजनात्मक क्रियाओं में सहगामी बनाकर (मानसिक स्वास्थ्य के 6 आयामों को ध्यान में रखकर) स्वतंत्रतापूर्वक अभिव्यक्ति देने के लिए प्रोत्साहित कर उनमें आत्मविश्वास की वृद्धि की जा सकती है जिससे छात्र–छात्राओं को संवेगात्मक रूप से विकसित कर मानसिक रूप से स्वस्थ बनाया जा सकता है और वे भविष्य में अच्छी उपलब्धि को प्राप्त कर सकेंगे।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ. एच.के. कपिल, *सांख्यिकीय गणना*, प्रकाशक – विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
2. डॉ. गुप्ता एवं गुप्ता, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, द्वितीय संस्करण, प्रकाशन – शारदा पुस्तक भवन, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद
3. डॉ. पी.डी. पाठक, *भारतीय शिक्षा एवं उसकी समस्याएं*, प्रकाशक – विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
4. शर्मा आ.ए. (2001), *शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया*, उच्च शिक्षा संस्थान, मेरठ
5. भारतीय आधुनिक शिक्षा (2000), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली

❑❑❑